बिहार विद्यालय परीक्षा समिति, पटना

वर्ष 2017 का मॉडल प्रश्न पत्र एवं उत्तरमाला

PHILOSOPHY

Set-III

MODEL PAPER - III

कुल प्रश्नों की संख्या : 40 + 10 + 5 = 55

Total No. of Questions : 40 + 10 + 5 = 55

कुल मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 24

Total No. 1 of Printed Pages : 24

PHILOSOPHY

A.-PHL. (OPT)

समय : 3 घंटे 15 मिनट] [पूर्णांक : 100

Time : 3 Hours 15 Minutes] [Marks : 100

परीक्षार्थी के लिये निर्देश :

Instructions to the candidate :

1. परीक्षार्थी यथासंभव अपने शब्दों में ही उत्तर दें।

   Candidates are required to give their answers in their own words as far as practicable.
2. दाहिनी ओर हाशिये पर दिये हुए अंक पूर्णांक निर्दिष्ट करते हैं।

   Figures in the right hand margin indicate full marks.
3. परीक्षार्थी प्रत्येक उत्तर के साथ भाग संख्या, खण्ड संख्या और प्रश्न संख्या अवश्य लिखें।

   Write Section number, Group number and Question number with every answer.

निर्देश : इस प्रश्न-पत्र में दो भाग-भाग-I एवं भाग-II हैं। भाग-I में खण्ड-अ एवं भाग-II में खण्ड-ब एवं खण्ड-स हैं।

भाग-I : भाग-I के खण्ड-अ के प्रश्न वस्तुनिष्ठ प्रकार के हैं। इस खण्ड के प्रश्न संख्या 1 से 40 तक प्रत्येक 1 अंक का है।

भाग-II : भाग-II के सभी प्रश्न गैर-वस्तुनिष्ठ हैं। भाग-II के खण्ड-ब के प्रश्न लघु उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी 10 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 3 अंक का है। भाग-II के खण्ड-स के प्रश्न दीर्घ उत्तरीय प्रकार के हैं। सभी 5 प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न 6 अंक का है।

***Instructions* :**

This paper consists of two Sections - Section - I and II. Section - I consists of Group - A and Section - II consists of Group-B & Group - C.

***Section*-I :** Group A of Section - I are Objective Type Questions. In this group Question Nos. 1 to 40 carry 1 mark each.

***Section*-II :** All Questions of Section - II are Non-Objective Type. Group -B of Section-II are Short Answer Type questions. Answer all 10 questions. Each question carries 3 marks. Group-C of Section-II are Long Answer Type Questions. Answer all 5 questions. Each question carries 6 marks.

Model Paper - III

भाग I

Section - I

खण्ड–अ

Group - A

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

(Objective Type Questions)

सभी ४० प्रश्नों के उत्तर दें। सही उत्तर का चयन करते हुए प्रत्येक प्रश्न का उत्तर दें:

40 × 1 = 40

Answer all the questions. Answer each question by Selecting the correct answer

40 × 1 = 40

1. मीमांसा दर्शन के प्रवर्तक हैं-

(a) जैमिनी (b) कणाद

(c) कपिल (d) गौतम

The founder of Mimansa Philosophy is:

(a) Jaimini (b) Kanad

(c) Kapil (d) Gautam

2. वेदान्त दर्शन के प्रवर्तक हैं-

(a) वादरायण (b) महावीर

(c) शंकर (d) अक्षपाद

The founder of Vedanta Philosophy:

(a) Vadrayan (b) Mahavir

(c) Sankar (d) Akshapad

3. इनमें से कौन नास्तिक है-

(a) सांख्य (b) न्याय

(c) जैन (d) वेदान्त

Heterodox among the following is:

(a) Sankhya (b) Nyaya

(c) Jaina (d) Vedanta

4. गीता का उपदेश है-

(a) सकाम कर्म (b) निष्काम कर्म

(c) कर्म से संन्यास (d) ये सभी

Preaching of Gita is:

(a) Sakaam Karma (b) Nishkaam Karma

(c) Sanyas in Action (d) All the above.

5. **भारतीय दर्शन में अयथार्थ ज्ञान कहलाता है-**

(a) अप्रमा (b) प्रमा

(c) प्रमाण (d) इनमें से कोई नहीं

Invalid Knowledge in Indian Philosophy is called:

(a) Aprama (b) Prama

(c) Praman (d) None of these

6. **शिक्षा दर्शन एक शाखा है-**

(a) भौतिक विज्ञान (b) मनोविज्ञान

(c) रसायन शास्त्र (d) दर्शनशास्त्र

Educational philosophy is a branch of:

(a) Physics (b) Psychology

(c) Chemistry (d) Philosophy

7. **ज्ञान की प्राप्ति निगमनात्मक विधि से होती है-**

(a) बुद्धिवाद में (b) अनुभववाद में

(c) समीक्षावाद में (d) इनमें से कोई नहीं

Deductive method of knowledge is applied in

(a) Rationalism (b) Empiricism

(c) Criticism (d) None of these

8. **ज्ञान की प्राप्ति आगनात्मक विधि से होती है-**

(a) बुद्धिवाद (b) अनुभववाद

(c) समीक्षावाद (d) इनमें से कोई नहीं

Inductive method of Knowledge is applied in:

(a) Rationalism (b) Empiricism

(c) Criticism (d) None of these

9. **किसका मानना है कि कोई प्रत्यय जन्मजात नहीं होता है-**

(a) लॉक (b) देकार्त

(c) स्पिनोजा (d) इनमें से कोई नहीं

Who among the following refuted Innate Ideas?

(a) Locke (b) Descartes

(c) Spinoza (d) None of these

10. **जैन दर्शन में ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त क्या है-**

(a) स्याद्वाद (b) अनेकान्तवाद

(c) ख्यातिवाद (d) इनमें से कोई नहीं

What is the theory of Relativity of knowledge in Jaina Philosophy?

(a) Syadvad (b) Anekantvad

(c) Khyativad (d) None of these

11. स्पिनोजा ने स्वीकारा है-

(a) अंत:क्रियावाद (b) समानान्तरवाद

(c) पूर्वस्थापित सामंजस्यवाद (d) इनमें से कोई नहीं

Spinoza accepts:

(a) Interactionalism (b) Parallelism

(c) Pre-Established Harmony (d) Non of these

12. अभाव के दो प्रकार हैं-

(a) संसर्गाभाव (b) अन्योन्याभाव

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Two types of Non-Existence:

(a) Sansargabhaav (b) Anyonyabhav

(c) Both a & b (d) None of these

13. वैशेषिक दर्शन में पदार्थों की कितनी संख्या स्वीकार की गयी है?

(a) तीन (b) चार

(c) सात (d) पाँच

Padartha, in Vaisesika Philosophy are:

(a) Three (b) Four

(c) Seven (d) Five

14. न्याय दर्शन के अनुसार प्रमाणों की संख्या है-

(a) दो (इ) तीन

(c) पाँच (क) चार

The number of Praman in Nyaya Philosophy:

(a) Two (b) Three

(c) Five (d) four

15. सत्व का रंग होता है-

(a) लाल (b) सफेद

(c) काला (d) पीला

The colour of Satva is:

(a) Red (b) White

(c) Black (d) Yellow

16. जन्मजात प्रत्यय की सत्ता को स्वीकार करता है-

(a) देकार्त (b) लॉक

(c) बर्कले (d) इनमें से कोई नहीं

The existence of Innate Idea is accepted by:

(a) Descartes (b) Locke
(c) Berkeley (d) None of these

17. Cagito ergo sum किसने कहा ?

(a) देकार्त (b) काण्ट
(c) बर्कले (d) लॉक

Who said Cogito ergo sum?

(a) Descartes (b) Kant
(c) Berkeley (d) Locke

18. अष्टांग योग संबंधित है-

(a) भगवान बुद्ध (b) योग दर्शन
(c) वैशेषिक (d) इनमें से कोई नहीं

Eightfold Yog is related to:

(a) Lord Buddha (b) Yog Philosophy
(c) Vaisesika (d) None of these

19. नैतिक कर्म के लिए आवश्यक है-

(a) शुभ (b) उचित
(c) इच्छा स्वातंत्र्य (d) कर्म सम्पादन

Which of the following is essential for Moral Actions?

(a) Good (b) Right
(c) Freedom of Will (d) Performing actions

20. गीता का उपदेश है-

(a) सकाम कर्म (b) निष्काम कर्म
(c) कर्म में संन्यास (d) इनमें से कोई नहीं

The Preaching of the Gita is:

(a) Sakaam Karma (b) Nishkaam Karma
(c) Sanyas in Action (d) None of these

21. न्याय दर्शन के प्रणेता है-

(a) गौतम (b) कणाद
(c) जैमिन (d) कपिल

The founder of Nyay Philosophy:

(a) Gautam (b) Kanad
(c) Jaimini (d) Kapil

22. बुद्ध के अनुसार दुःख का मुख्य कारण है-

(a) तृष्णा (b) जाति
(c) नामरूप (d) अविद्या

The prime cause of suffering according to Buddha is:

(a) Trishna (b) Jati

(c) Naamroop (d) Avidya

23. ब्रह्म है-

(a) अनेक (b) अचेतन

(c) अनिर्वचनीय (d) इनमें से कोई नहीं

Brahm is:

(a) Many (b) Unconscious

(c) Anirvachniya (d) None of these

24. सामान्यतः हमारे आस-पास का सम्पूर्ण परिवेश कहलाता है-

(a) भौतिक (b) ऊर्जा

(c) पर्यावरण (d) इनमें से कोई नहीं

Our surroundings is generally called:

(a) Physical (b) Energy

(c) Environment (d) None of these

25. अंतःक्रियावाद किसका सिद्धांत है-

(a) देकार्त का (b) स्पिनोजा

(c) लॉक (d) इनमें से कोई नहीं

Interactionalism is a theory given by:

(a) Descates (b) Spinoza

(c) Locke (d) None of these

26. 'ज्ञान संश्लेषणात्मक अनुभव निरपेक्ष निर्णय है' सिद्धान्त संबंधित है-

(a) बुद्धिवादी (b) अनुभववादी

(c) समीक्षावादी (d) इनमें से कोई नहीं

'Knowledge is a synthetic judgment a priori' relates to:

(a) Rationalism (b) Empiricism

(c) Criticism (d) None of these

27. व्यापार व्यवसाय है-

(a) क्रूर (b) लाभोन्मुखी

(c) अनैतिक (d) इनमें से कोई नहीं

Profession is a business-

(a) Cruel (b) Profit-oriented

(c) Unethical (d) None of these

28. निम्नलिखित में से कौन-सा दर्शन बौद्धिक है-

(a) भारतीय दर्शन (b) पश्चिमी दर्शन

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Which of the following is rational?

(a) Indian Philosophy (b) Western Philosophy

(c) Both a & b (d) None of these

29. धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष किसके प्रकार हैं-

(a) कर्म (b) पुरुषार्थ

(c) आश्रम (d) वर्ण

Dharma, Artha, Kaam and Moksha are types of:-

(a) Karma (b) Purushartha

(c) Ashram (d) Varna

30. ऋत् का स्वामी है-

(a) वरुण (b) इन्द्र

(c) अग्नि (d) ये सभी

The guardian of Rta:

(a) Varuna (b) Indra

(c) Fira (d) All of these

31. गीता में योग का अर्थ है-

(a) आत्मा का परमात्मा से मिलन (b) भक्तियोग को

(c) दोनों (d) ये सभी

The meaning of Yoga in the Gita is:

(a) Assimilation of Atman to Parmatman (b) Bhakti Yoga

(c) Both a & b (d) All of these

32. स्याद्वाद है-

(a) ज्ञान की निरपेक्षता का सिद्धान्त (b) ज्ञान की सापेक्षता का सिद्धान्त

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

Syadvad is a theory of

(a) Absoluteness of Knowledge (b) Relativity of Knowledge

(c) Both a & b (d) None of these

33. जैन दर्शन के अनुसार किसी भी वस्तु के धर्म होते हैं-

(a) एक (b) पाँच

(c) सात (d) अनंत

The attributes of an object according to the Jaina Philosophy:

(a) One (b) Five

(c) Seven (d) Infinite

34. जब अनुमान दूसरों के लिए किया जाता है तो उसे उसे कहते हैं-

(a) स्वार्थानुमान (b) परार्थानुमान

(c) पूर्ववत् अनुमान (d) शेषवत् अनुमान

Inference for the sake of others is called:

(a) Swarthanuman (b) Prarthanuman

(c) Purwavat Anuman (d) Shesvat Anuman

35. दण्ड की अवधारणा है-

(a) सामाजिक (c) दार्शनिक

(c) नैतिक (d) सभी

The concept of punishment is:

(a) Social (b) Philosphical

(c) Moral (d) All the above

36. मीमांसा दर्शन है-

(a) कर्म प्रधान (b) आत्म प्रधान

(c) धर्म प्रधान (d) कोई नहीं

Mimansa Philosophy is:

(a) Ritualistic (b) Perfectionist

(c) Religious (d) None of these

37. योग दर्शन में योग का अर्थ है-

(a) आत्मा का परमात्मा के साथ मिलन (b) चितवृत्तियों का विरोध

(c) दोनों (d) इनमें से कोई नहीं

The meaning of Yoga in Yoga Philosophy is:

(a) Assimilation of Atman to Parmatman (b) Cessation of mental alteration

(c) Both a & b (d) None of these

38. विश्वसनीय व्यक्ति के कथन से जो ज्ञान प्राप्त है, उसका सम्बन्ध है-

(a) प्रत्यक्ष प्रमाण से (b) अनुमान प्रमाण से

(c) सत्व प्रमाण से (d) इनमें से कोई नहीं

The statement of a reliable person, relates to:

(a) Perception (b) Inference

(c) Satva (d) None of these

39. भारत में दर्शन की उत्पत्ति हुई है-

(a) जीवन की समस्याओं को हल करने के लिए (c) बौद्धिक ज्ञान

(c) आध्यात्मिक ज्ञान की प्राप्ति के लिए (d) इनमें से कोई नहीं

Philosophy in India, has originated for-

(a) To solve the problems of life (b) Rational Knowledge

(c) To attain Spiritual Knowledge (d) None of these

40. चार्वाक को छोड़कर भारत के सभी दार्शनिकों ने बन्धन का मूल कारण माना है-

(a) ज्ञान (b) अज्ञान

(c) ज्ञान एवं अज्ञान (d) इनमें से कोई नहीं

Except Charvak, all Indian thinkers have assumed the main cause of bondage-

(a) Knowledge (b) Ignorance

(c) Both a & b (d) None of these

Model Paper - III

भाग-II

खण्ड-ब

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

(Short Answer Type Questions)

सभी प्रश्नों के उत्तर दें : **10 × 3 = 30**

Answer All Questions : **10 × 3 = 30**

1. दर्शन की परिभाषा दें।

   Define Philosophy.

2. जैन दर्शन के अनुसार द्रव्य क्या है ?

   What is Dravya (Substance) according to the Jaina Philosophy? How many kinds of substance are thera?

3. जैन दर्शन के अनुसार मोक्ष क्या है ?

   What is Moksa is Jaina Philosophy?

4. प्रत्यक्ष का शाब्दिक अर्थ क्या है ? न्याय दर्शन में प्रत्यक्ष के कितने प्रकार हैं ?

   What is the literal meaning of Pratyaksa? What are the kinds of perception in Nyaya Philosophy?

5. न्याय दर्शन के प्रवर्त्तक कौन हैं तथा उनकी पुस्तक का नाम क्या है ?

   Who is the founder of Nyaya Philosophy? What is the name of his renowned book on Nyaya?

6. बहुकारणवाद क्या है ?

   What is Pluralism?

7. प्रत्ययवाद और वस्तुवाद का संक्षिप्त परिचय दें।

   Show your brief acquaintance with Idealism and Realism.

8. शरीर और मन को समझने के लिए बुद्धिवाद में कितने सिद्धांत हैं? इस संबंध में देकार्त का क्या मत है?

   How many theories are accepted to understand the relationship between mind and body in Rationalism? What is Descartes position in this regard?

9. क्या हमें प्लास्टिक पॉलिथीन का उपयोग सीमित करना चाहिए? क्यों ? इस समस्या को हम नीतिशास्त्र के किस शाखा में अध्ययन करते हैं?

   Should we limit the utilization of Polythene bags? Why? Under which branch of Ethics, we deal with this problem?

10. मानसिक पर्यावरण क्या है?

    What is Psychological Environment?

खण्ड–स

Group - C

(दीर्घ उत्तरीय प्रश्न)

(Long Answer Type Questions)

11. भारतीय दर्शन के स्वरूप से आप क्या समझते हैं? स्पष्ट करें।

    What do you mean by the nature of Indian Philosophy? Explain.

12. शंकर के अनुसार आत्मा का स्वरूप क्या है ?

    Describe the nature of Atman of Shankar?

13. योग के अष्टांग मार्ग की विवेचना कीजिए ?

    Discuss the eightfold path of Yoga?

14. वैशेषिक के सामान्य की व्याख्या करें ?

    Explain the Samanya according to Vaiseshika?

15. चिकित्सा नीतिशास्त्र के मुख्य सिद्धांतों की विवेचना कीजिए?

    Discuss the main principles of Medical Ethics?

-ANSWER-

1. (a)	2. (c)	3. (c)	4. (b)	5. (a)
6. (d)	7. (d)	8. (b)	9. (a)	10. (a)
11. (b)	12. (c)	13. (c)	14. (d)	15. (b)
16. (a)	17. (a)	18. (b)	19. (c)	20. (b)
21. (a)	22. (d)	23. (c)	24. (c)	25. (a)
26. (c)	27. (b)	28. (b)	29. (b)	30. (a)
31. (a)	32. (b)	33. (d)	34. (b)	35. (c)
36. (a)	37. (b)	38. (c)	39. (a)	40. (b)

-ANSWER-

1. दर्शन विश्व को उसके सर्वांग में समझने का एक निष्पक्ष बौद्धिक प्रयास है।
2. जैन दर्शन के अनुसार द्रव्य व है जिसके गुण व पर्याय हैं। द्रव्य दो प्रकार का होता है (i) अस्तिकाय और (ii) अनस्तिकाय। अस्तिकाय द्रव्य वह है जो स्थान घेरता है। अनस्तिकाय द्रव्य है जो स्थान नहीं घेरता है और अमूर्त्त है।
3. जैन दर्शन के अनुसार, कषायों के कारण जीव का पुद्गल से आक्रांत होना, मोक्ष कहलाता है।
4. प्रत्यक्ष दो शब्दों से बना है- प्रति + अक्षि। अतः, प्रत्यक्ष का शाब्दिक अर्थ है जो आँखों के सामने हो। न्याय दर्शन के प्रत्यक्ष दो प्रकार का है-(i) सविकल्पक (ii) निर्विकल्पक।
5. न्याय दर्शन के प्रवर्तक गौतम हैं तथा उनकी पुस्तक का नाम न्यायसूत्र है।
6. जब एक कार्य के अनेक कारण हों, तब बहुकारणवाद होता है।
7. प्रत्ययवाद में वस्तुओं का अस्तित्व ज्ञाता पर निर्भर माना जाता है, जबकि वस्तुवाद में वस्तुओं का अस्तित्व ज्ञाता पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसका स्वतंत्र अस्तित्व स्वीकार किया जाता है।
8. बुद्धिवाद में शरीर एवं मन को समझने के लिए दो सिद्धांत हैं- (i) अन्योन्याश्रयवाद तथा (ii) समानान्तरवाद। देकार्त इस संबंध में अन्योन्याश्रयवाद को स्वीकारते हैं जिसमें शरीर व मन को एक-दूसरे से अलग माना जाता है।
9. हाँ, क्योंकि इसका पुनःचक्रण नहीं किया जा सकता। इस समस्या का अध्ययन हम पर्यावरणीय नीतिशास्त्र में करते हैं।
10. मन को उन्नत बनाना या मन को भली भाँति विकास करना, मानसिक पर्यावरण कहलाता है।
11. भारतीय दर्शन का लक्ष्य मोक्ष है। सभी भारतीय दर्शनों का इस बात पर विचार है कि दुःख या बंधनों का कारण मनुष्य का अज्ञान है। यह अज्ञान केवल बौद्धिक ही नहीं वरन् आध्यात्मिक और मनोवैज्ञानिक भी है। मनोवैज्ञानिक और आध्यात्मिक अज्ञान से मुक्ति प्राप्त करने के लिए सभी भारतीय दर्शन किसी-न-किसी

तरह के अभ्यास या योग की आवश्यकता को महसूस करते हैं। बुद्ध से लेकर पतंजलि तथा शंकर और रामानुज आदि सभी दार्शनिकों ने दर्शन के मनोवैज्ञानिक पक्ष पर अधिक बल दिया है।

भारतीय दर्शन को जानने से पहले दर्शन शब्द के बारे में जानकारी हासिल करना अति आवश्यक होगा।

दर्शन शब्द का शाब्दिक अर्थ- गणितीय व्याकरण के अनुसार दर्शन शब्द हशिरप्रेक्षणे धातु ल्युट् प्रत्यय करने से निष्पन्न होती है। यह ल्युट् प्रत्यय भाव कारण तथा अधिकरण कारकों के अर्थ में होता है। इस प्रकार दर्शन शब्द का शाब्दिक अर्थ है, 'दृष्टि या देखना, जिसके द्वारा देखा जाये या जिसमें देखा जाये।'

दर्शन देशकाल तथा संस्कृतिक की पृष्ठभूमि में सत्यों का साक्षात्कार है। इसके अतिरिक्त स्थान विशेष के प्रचलित विचारों से दर्शन की उत्पत्ति होती है। यही कारण है कि मूलभूत सिद्धांत में एक मत न होने पर भी प्रत्येक देश के दार्शनिक विचारों में उस देश की संस्कृति की गहरी छाप होती है। भारतीय दर्शनों में मतभेद पाये जाने पर भी भारतीय संस्कृति की छाप रहने के कारण कुछ ऐसी अद्‌भुत एकरूपता पायी जाती है, जो सहज ही स्पष्ट हो जाती है।

12. शंकर अद्वैतवाद के प्रवर्तक हैं। इनके अनुसार परम सत्ता एक ही है। इसे ब्रह्म या आत्मा कहते हैं। हम साधारणत: अपनी आत्मा को ब्रह्म से पृथक सत्ता मान लेते हैं। वास्तव में ब्रह्म और आत्मा दोनों एक ही है। शंकर आत्मा को स्वयंसिद्ध मानते हैं। इसे सिद्ध करने के लिए तर्क की आवश्यकता नहीं पड़ती। जब कोई कहता है, 'मैं हूँ' या 'मैं नहीं हूँ' तब दोनों ही कथनों से आत्मा का अस्तित्व प्रकट होता है। इन कथनों पर कोई संदेह नहीं कर सकता, क्योंकि संदेह करने के लिये भी 'कर्त्ता' की आवश्यकता पड़ती है और यह कर्त्ता 'मैं' या 'आत्मा' है। इस प्रकार, आत्मा की सत्ता निर्विवाद रूप से सत्य है।

    माया या अविद्या के कारण आत्मा शरीर, इन्द्रिय, अन्त:करण तथा जगत से स्वयं को अभिन्न मान 'जीव' के रूप में प्रतीत होता है।

    जीव तथा ईश्वर की व्यावहारिक सत्यता है। परमार्थिक रूप से सभी ब्रह्म में एकाकार हो जाते हैं। ब्रह्म ज्ञान की साक्षात् अनुभूति के बाद जीव अपना भूला हुआ स्वरूप पुन: प्राप्त कर लेता है। अत: कहा गया है 'जीवों ब्रहैव नापर:।

    वस्तुत: आत्मा की सत्यता पारमार्थिक है। नित्य सत्ता इसका स्वरूप लक्षण है। जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति आत्मा की अभिव्यक्ति लक्षण है। जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति आत्मा की अभिव्यक्ति की तीन व्यावहारिक अवस्थाएँ हैं।

    न्याय-वैशेषिक, सांख्य मीमांसा आदि के आत्मा से भिन्न शंकर आत्मा को एक मानते हैं। ब्रह्म और आत्मा का तादात्य भाव ही मोक्ष है। यह कोई उपलब्धि नहीं बल्कि प्राप्तस्य प्राप्ति है।

13. सांख्य की तरह योग भी विवेक ज्ञान को मुक्ति का साधन मानता है। विवेकज्ञान की प्राप्ति के लिये योग में आठ प्रकार के साधन बतलाये गए हैं, जिन्हें 'अष्टांग साधन' कहते हैं।

    (१) यम- भारतीय दर्शन में वर्णित पाँच व्रतों अहिंसा, सत्य, अस्तेय, अपरिग्रह तथा ब्रह्मचर्य का पालन करना ही यम है। यह निषेधात्मक सद्‌गुण है।

    (२) नियम- इसके अंतर्गत पाँच अनुशासन होते हैं- इसके अंतर्गत पाँच अनुशासन होते हैं- शौच, तपस्, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्राणिधान। यह भावनात्मक सद्‌गुण है।

(३) आसन्– शरीर को एक विशेष मुद्रा में रखना आसन है।

(४) प्राणायाम्– श्वास क्रिया पर नियंत्रण है, जो तीन प्रकार से किया जा सकता है– पूरक, कुम्भक तथा रेचक।

(५) प्रत्याहार– अपनी इन्द्रियों को बाह्य एवं आंतरिक विषयों से खींचकर मन को अपने वश में करना ही प्रत्याहार है।

(६) धारणा– बाह्य और आंतरिक अभीष्ट विषयों पर चित्त को केन्द्रित करना।

(७) ध्यान– ध्यान में ध्याता, ध्येय और ध्यान की अलग–अलग प्रतीति होती है।

(८) समाधि– वह अभीष्ट विषय में इतना लीन हो जाता है कि उसे अपने अस्तित्व की चेतना नहीं रहती। वह विषय का पूर्ण ज्ञान प्राप्त कर लेता है। समाधि की दो अवस्थाएँ हैं–

(a) ससम्प्रज्ञात समाधि– इसके चार सोपान हैं– सवितर्क समाधि, सविचार समाधि, सानंद समाधि, सास्मित समाधि।

(b) असम्प्रज्ञात समाधि– यह दो प्रकार की होती है– भाव प्रत्यय, उपाय प्रत्यय।

प्रथम पाँच योग के बाह्य साधन है। इसलिए इन्हें 'बहिरंग साधन' तथा धारणा, ध्यान और समाधि को 'अन्तरंग साधन' कहते हैं।

14. 'सामान्य' वह पदार्थ है जिसके कारण बहुत से व्यक्ति एक गति के अंतर्गत चले आते हैं जिसके कारण उन सबको एक ही नाम से पुकारा जाता है। जैसे– राम, श्याम आदि विभिन्न व्यक्तियों में एक ऐसा सामान्य तत्व पाया जाता है, जिसके कारण ये सभ्झी एक 'मनुष्य' जाति के अंतर्गत रखे जाते हैं और इन्हें 'मनुष्य' नाम से पुकारते हैं। व्यक्ति विशेष जन्म लेता है और मरता है, किन्तु सामान्य नित्य है। सामान्य द्रव्यों, गुणों एवं कर्मों में विद्यमान रहता है।

सामान्य के संबंध में भारतीय दर्शन में तीन प्रकार के मत पाए जाते हैं–(a) नामवाद (b) प्रत्ययवाद और (c) वस्तुवाद।

वस्तुवाद के प्रतिपादक न्याय–वैशेषिक विचारक हैं। इनके अनुसार सामान्य न तो नाममात्र है और न मानसिक प्रत्यय ही है। न्याय–वैशेषिक दर्शन में सामान्य की यह परिभाषा दी गयी है– 'सामान्य नित्य एक और अनेक वस्तुओं में समाविष्ट है। इसका विश्लेषण करने पर सामान्य की कई विशेषताएँ स्पष्ट दीख पड़ती है–

सामान्य एक है।

सामान्य नित्य है।

सामान्य अनेक वस्तुओं या व्यक्तियों में समावेत है।

सामान्य का सामान्य नहीं होता।

सामान्य द्रव्य, गुण एवं कर्म में पााय जाता है।

न्याय-वैशेषिक के अनुसार सामान्य का ज्ञान हमें सामान्य-लक्षण प्रत्यक्ष होता है। जब हम व्यक्ति विशेष का प्रत्यक्ष करते हैं, तब उसके अंदर निहित 'सामान्य' का भी प्रत्यक्षीकरण हो जाता है। जैसे- राम, श्याम आदि व्यक्तियों के प्रत्यक्ष से 'मनुष्यत्व' का भी प्रत्यक्ष हो जाता है।

वैशेषिक दर्शन में व्यापकता या विस्तार के दृष्टिकोण से तीन प्रकार के साामान्य हैं-(i) परसामान्य (ii) अपरसामान्य और (iii) परापरसामान्य।

15. पुरातन समय के शिक्षाशास्त्रियों ने न केवल चिकित्सा क्षेत्र का ज्ञान बढ़ाया बल्कि चिकित्सा के सिद्धांत करने के नियम, चिकित्सक की आचार नीति की बतायी। लगता है कि उन लोगों को पहले ही इस बात का ज्ञान हो गया था कि आने वाले समय में चिकित्सा जैसे पवित्रतम पेशे में भी भ्रष्टाचार व लालच की प्रवृत्ति पनप जायेगी। चिकित्सक को तो भगवान के रूप में माना जाता है परन्तु आज यह हालत है कि चिकित्सक रूपी भगवान ही हैवान बने बैठे हैं। उनके मन में पैसा कमाने की इतनी वृत्तियाँ हैं कि वे साम, दाम, दण्ड, भेद इन चारों विधियों से धन कमाने में लगे हैं।

    वास्तव में प्रत्येक चिकित्सक सामाजिक दायित्व से बंधा है। उस दायित्व को पूरा करना ही चिकित्सक का कर्तव्य है। अपने कर्तव्य की पूर्ति के लिए जिन उपायों को अपनाने की आवश्यकता है। वह है- ईमानदारी, सहानुभूति, सत्यवादिता, दयालुता, प्रेम आदि। किसी रोगी के साथ ईमानदारी से व कार्य-कुशलता से व्यवहार किया जाये तो उसके मन पर अच्छा प्रभाव पड़ता है और रोगी का कुछ रोग तो अपने-आप ही ठीक हो जाता है। चिकित्सक अपने रोगियों के साथ प्रेमपूर्वक बातें करें, उसका दर्द समझे, उसे अपनापन प्रदर्शित करें तो रोगी को अस्पताल-अस्पताल न लगकर घर लगने लगता है।

    मगर आज के समय में चिकित्सक मोटी फीस, महंगे ऑपरेशन, खर्चीली दवाइयों पर रोगी का इतना खर्च करा देते हैं कि रोगी अपने रोग न मरकर अपने इलाज के खर्चे तले ही आकर मर जाता है।

    अतः आज इस विषय पर समग्र चिन्तन की महती आवश्यकता है। क्या इतने प्रतिष्ठित व्यवसाय बल्कि सेवा क्षेत्र में व्याप्त अनैतिकता को दूर किये जाने का कोई प्रयास होगा?

❑